ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2020; 6(5): 43-46
www.allresearchjournal.com
Received: 08-03-2020
Accepted: 13-04-2020

भरत कुमार
शोधार्थी, स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान, ल. ना. मि. विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत।

Corresponding Author:
भरत कुमार
शोधार्थी, स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान, ल. ना. मि. विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत।

भारत–अमेरिका संबंधों की गुटनिरपेक्ष आन्दोलन में भूमिका – एक समीक्षात्मक अवलोकन

भरत कुमार

सारांश
भारत और अमेरिका विश्व के दो विशाल लोकतांत्रिक देश है। दोनों देशों को मानवीय स्वतन्त्रता, विश्व शान्ति, मानवीय अधिकारों व अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था के पोषक के रूप में देखा जाता है। इस बुनियादी समानताओं के बावजूद उनके बीच समय समय पर ऐसे अनेक तनाव के बिन्दु उभरे जिस कारण उनमें पूर्व में घनिष्ठ मैत्री सम्बन्धों की स्थापना का मार्ग कभी प्रशस्त नहीं हो पाया। दोनों के पारस्परिक सम्बन्ध काफी उतार चढ़ाव के रहें है।
भारत अमेरिका सम्बन्धों को दो मौलिक परन्तु विरोधी प्रेरणा श्रोंतों की गत्यात्मक अन्तःक्रिया के सन्दर्भ में समझना चाहिये। एक ओर तो भारत की अर्न्तराष्ट्रीय राजनीति में सशक्त अभिकर्त्ता के रूप में उदित होने की सतत् महत्वाकांक्षा है। जबकि उसके लायक सामर्थ्य उसमें नहीं है और दूसरी ओर अमेरिका को अपनी सुरक्षा और शक्ति प्रसार के लिये दूसरे राष्ट्रों का उपयोग करने का लक्ष्य रहा है। भारत – अमेरिकी पारस्परिक सम्बन्धों को समझने की कुन्जी इसी से मिलेगी, न कि उस व्यक्तिगत सहानुभूति या आक्रोश में जो भारत के प्रति अमेरिकी नेता विशेष के ह्रदय में अथवा किसी राजदूत के व्यक्तिगत विचार में।

मुख्य शब्दः– भारत, अमेरिका, गुटनिरपेक्ष, राजनीति, अन्तर्राष्ट्रीय

प्रस्तावना
भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का अध्ययन एक ऐसा दुःखद एवं सुखद प्रसंग है जिसे कि परम्परागत मुहावरे में अभिव्यक्ति करना कठिन है। दोनों देशों के बीच सम्बन्धों का रेखाचित्र मित्रता की चाह कटुता, तनाव, अलगाव, और अविश्वास के दायरे में निरंतर चढ़ता उतरता रहा है। सहजता और मित्रता के क्षण तो वर्षा ऋतु में बादलों से घिरे आकाश में यदा कदा दृष्यमान प्रकाश की किरण की तरह क्षणिक ही रहे हैं। सहज सम्बन्ध बनाने की चाह के आधार भावनाओं और मनोकामनाओं तक ही सीमित रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय महत्व के प्रसंगों पर विचार और व्यवहार में मतभेद ही उजागर हुआ है। स्वेज नहर और कांगो विवाद के मसलों के अतिरिक्त समान दृष्टिकोण तथा सहयोग का सर्वथा अभाव देखा गया है। समय के साथ दोनों देशों में मतभेद के दायरे अधिक गहरे होते गये। इसी तथ्य की ओर संकेत करते हुए डा0 बलदेव राज नायर अपनी पुस्तक ''अमेरिका और भारतः संघर्ष की जड़ें'' में लिखते है कि अमरीकी विदेश नीति संसार के प्रत्येक देश को प्रभावित करती है। इसके क्रियान्वयन में मित्रों और सहयोगी राष्ट्रों के सम्बन्ध में संयुक्त राज्य अमेरिका काफी दृढ़ और शत्रुओं के साथ निर्मल तथा क्रूर रहा है। तटस्थ राष्ट्रों के प्रति उसका रवैया घृणास्पद और कठोर रहा है।
भारत को अक्सर इस विश्वव्यापी रणनीति का आक्रोष सहना पड़ा भारत में अमरीकी विदेश नीति का प्रबल विरोध हुआ है क्योंकि भारतीय अपने को अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में एक शक्ति मानते है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में भारत का सन्दर्भ बिन्दु पाकिस्तान बांग्लादेश जैसे देश नहीं, अपितु बड़ी शक्तियां है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में भारत की महत्वाकांक्षा सामर्थ्य कर्त्ता बनने की अर्थात् एक ऐसी स्वतन्त्र शक्ति की जो अप्रिय निर्णयों का प्रतिरोध कर सके, अन्तर्राष्ट्रीय शक्ति संरचना का अंग बनने की तथा प्रमुख विश्व शक्तियों के साथ विश्व को प्रभावित करने वाले निर्णयों में पूरा भागीदार बनने की महत्वाकांक्षी रही है। जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका की सुनिश्चित नीति रही है विशेषतः द्वितीय विश्व युद्ध के बाद कि मित्र या विपक्षी कोई भी नया शक्ति केन्द्र न बनने पाये। उनका अस्तित्व ही अमेरिका के प्रभाव को घटा देगा और इस प्रकार अमेरिका के उन स्वार्थो और हितों को आघात लगेगा। जिनके साथ अमेरिका ने अपनी अखण्डता एकातरफा समृद्धि और कल्याण जोड़ रखा है। इसका निश्चित प्रभाव पड़ा व 1962 में संयुक्त राष्ट्रसंघ महासभा ने एक संकल्प (प्रस्ताव संख्या 1815) पारित किया जिसमें निम्न सूत्र समाहित थे।

1. सभी राष्ट्र अन्य राष्ट्रों की स्वतंत्रता, प्रादेशिक अखण्डता के विरूद्ध अपने अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में बल प्रयोग या उसकी धमकी से दूर रहेंगे।
2. सभी राज्य अपने अर्न्तराष्ट्रीय विवादों का शांतिपूर्ण तरीके से निपटारा करेंगे ताकि अर्न्तराष्ट्रीय शांति व सुरक्षा को खतरा पैदा ना हो।
3. सभी राज्य, अन्य राज्यों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेंगें
4. सभी राज्य परस्पर सहयोग करेंगे।
5. सभी राष्ट्रों के समान अधिकार है तथा उन्हें आत्म निर्भरता का अधिकार भी प्राप्त है।
6. सभी राज्यों को सार्वभौम का अधिकार प्राप्त है।
7. सभी राज्य सत्य निष्ठा से संयुक्त राष्ट्र संघ के दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

बाद में 1964 में जो सम्मेलन हुआ उसका केन्द्र बिन्दु यही था कि सम्पूर्ण मानव जाति को ही यह मानना चाहिये कि शांतिपूर्ण सहअस्तित्व ही सार्वभौम, स्वतंत्रता समानता व न्याय पर आधारित शांति को सुदृढ़ बना सकता है। अतः निरंतर इसी दिशा में कार्य किया जाना चाहिये। भारत के प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू एक प्रसिद्ध वाक्य के माध्यम से शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व के पर्याय बन गये थे। ''जियो और जीने दो''। बाद में 1970 और दूसरे सम्मेलनों में जो कुछ हुआ उसमें गुट निरपेक्ष आंदोलन के मंतव्य व प्रयोजन स्पष्ट होते गये। शीत युद्ध की समाप्ति के बाद भी नव उपनिवेशवाद ने जिस तरह पांव पसारे उसके अर्द्ध विकसित व विकासशील देशों की निर्भरता विकसित देशों पर बनी रहे। क्योंकि उनको अपने विकास के लिये धन व तकनीक चाहिये। और इन्हीं के नाम पर सहायता करके विकसित देश विकासशील देशों पर अपना प्रभाव बनाये रखते है। इसलिये गुट निरपेक्ष आंदोलन ने शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद भी निरंतर यह दोहराया गया कि हमें कम से कम हमारे संकल्पों और संयुक्त राष्ट्र के चार्टर में अन्तर्निहित प्रयोजनों के प्रति अब भी निष्ठा व्यक्त करनी चाहिये। ऐसी स्थिति में गुटनिरपेक्ष आंदोलन के हवाना में हुये 14वें सम्मलेन में जो कुछ स्वीकार किया।

भारत अमेरिका सम्बन्धों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

स्वतंत्रता पूर्व भारत के अमेरिका के साथ जो सम्बन्ध थे। उनका निर्वाहन ब्रिटेन करता था। पराधीन होने के कारण भारत की विदेश नीति स्वतंत्र प्रकृति की नहीं थी। उस समय भारत अमेरिका सम्बन्धों की प्रकृति, चरित्र, एवं शैली का निर्धारण भारत की पराधीनता के द्वारा ही सम्भव था। ब्रिटेन शासन काल में भारतीय अमरीकियों के सम्पर्क में आये और वे उनसे अपेक्षा करने लगें कि संयुक्त राज्य अमेरिका जो कभी स्वयं ब्रिटिश साम्राज्यवाद का शिकार रहा वह भारत की स्वतंत्रता के लिये अवश्य प्रयास करेगा। निःसन्देह वांशिगटन ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रति सहानुभूति जताई। मगर वह मौखिक सहानुभूति थी। ब्रिटेन के साथ मैत्री सम्बन्ध होने के कारण अमेरिका इस दिशा में कई वर्षो तक सक्रिय भूमिका नहीं निभा पाया। प्रथम एवं द्वितीय विश्व युद्ध की अवधि में अमरीकियों ने राजनीतिक एवं नैतिक समर्थन के महत्व को समझा और यहाँ तक कि उन्होंने भारतीय उप महाद्वीप में अमेरिका के सैनिक सामरिक और भू राजनैतिक हितों की पहचान भी की। पर्ल हार्वर पर जापान के आक्रमण ने रूजवैल्ट प्रशासन को भारत के महत्व को स्वीकारने के लिये बाध्य किया। अमरिकी बुद्धिजीवियों ने समय–2 पर भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष को समर्थन देने के लिये अमेरिका ने जनमत तैयार किया था। परतंत्र राष्ट्रों के प्रति रूजवेल्ट प्रशासन की नीति में नैतिकता का प्रदर्शन तो था परंतु वह विशुद्ध व्यवहारिकता पर निर्धारित था। अमेरिका ने अपने सहयोगी ब्रिटेन पर भारत की स्वतंत्रता के लिये कोई विशेष दबाव नहीं डाला।

शीतयुद्ध से पूर्व–भारत अमेरिका सम्बन्ध

शीतयुद्ध से पूर्व भारत और अमेरिका में कोई विशेष सम्पर्क नहीं था क्योंकि ये दोनों देश बहुत दूर स्थित है। और फिर भारत में अंग्रेज शासक जान बूझकर भारत को दूसरे देशों के सम्पर्क में आने नहीं देना चाहते थे। अमेरिका स्वयं भी द्वितीय विश्व युद्ध से पूर्व पृथ्कवादी नीति का अनुसरण करता आ रहा है। बहुत कम संख्या में अमरीकी यात्री भारत आते थे, क्योंकि एक तो अमेरिका को उस समय चीन और जापान को छोड़कर किसी एशियाई देश में रूचि नहीं थी, दूसरे भारत की गरीबी अशिक्षा अन्धविश्वास आदि को लेकर विचित्र कहानियां अमेरिका में प्रचलित थीं जैसे भारत सपेरों, जादूगरों और मदारियों का देश है आदि। यह सच है कि स्वतन्त्रता के पूर्व कुछ अमरीकी पत्रकार तथा लेखक भारत आये थे और स्वतन्त्रता आन्दोलन से जुड़े कुछ नेता लाला हरदयाल, सी एफ एंड्रयूज तथा श्रीमती सरोजनी नायडू, स्वामी विवेकानन्द आदि अमेरिका गये थे। अमेरिकी पत्रकारों तथा लेखकों ने भारत की गरीबी और पिछड़ेपन को चित्रित करने का प्रयास भी किया था। मिस कैथरीन मेयो द्वारा लिखित पुस्तक 'मदर इण्डिया' इसका प्रमाण है। तथापि सत्य यह है कि दोनों के सांस्कृतिक, सामाजिक सम्बन्ध नाम मात्र के थे। भारतीय विद्यार्थियों को भी अमेरिका में अध्ययन के लिये हतोत्साहित किया जाता था। संयुक्त राज्य अमेरिका के अप्रवास नियमों ने भारतीयों को नागरिक के रूप में अमेरिका में बसने पर प्रतिबन्ध लगा दिया था।

स्वामी विवेकानन्द और रामतीर्थ ने अमेरिका जाकर अपने भाषणों द्वारा भारतीय धर्म तथा संस्कृति के बारे में फैली अनेक भ्रान्तियों को दूर किया। 1893 में स्वामी विवेकानन्द अमेरिका गये। जहां शिकागो में उन्होंने सर्वधर्म सम्मेलन में भाषण दिया। शिकागो सर्वधर्म सम्मेलन से पूर्व उनकी भेंट हावर्ड यूनिवर्सिटी के विख्यात प्रोफेसर जॉन हेनरी राइट से हुई। प्रो0 राइट ने स्वामी जी को सर्वधर्म सम्मेलन के सभापति के नाम एक परिचय पत्र दिया था। इस पत्र में डा0 जान हेनरी राइट ने यह लिखा था। ''यहाँ एक ऐसा व्यक्ति है जो अपने यहाँ के सारे विद्वान प्रोफेसर की इकठ्ठी विद्वता से कहीं अधिक विद्वान है। विवेकानन्द का भाषण भारत की सार्वदेशिकता, सर्वधर्मसम्भाव और विख्यात ह्रदयता से ओत प्रोत था जिसने वहाँ के हर श्रोता को मंत्र मुग्ध कर दिया।

प्रथम विश्व युद्ध के बाद भारत और अमेरिका एक दूसरे के सम्पर्क में आने लगे। भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन के कई नेता अमेरिका को लोकतन्त्र और स्वतन्त्रता का महान समर्थक समझते थे। 1912 में लाल हरदयाल ने अमेरिका में गदरपार्टी की स्थापना की। 1917 में अमेरिका में निवास करने वाले कतिपय भारतीयों ने एक इण्डियन होमरूल लीग की स्थापना की। 1927 में कुछ भारतीयों ने इण्डिया लीग नामक एक दूसरी संस्था स्थापित की। 1943 में भारतीय स्वाधीनता राष्ट्रीय समिति की स्थापना वाशिंगटन में हुई थी। 1929 में सी0 एफ0 एंड्रयूज तथा श्रीमती सरोजनी नायडू ने भारतीय समस्या के प्रति अमरीकी जनता से सहानुभूति प्राप्त करने के लिये अमेरिका का दौरा भी किया।

भारत अमेरिका को अब तक लोकतंत्र और राष्ट्रीय आत्मनिर्णय के समर्थक राष्ट्र के रूप में देखता था, किन्तु 1927 के ब्रुसेल्स सम्मेलन में भारत का भ्रम टुट गया लैटिन अमेरिकी देशों से आये प्रतिनिधियों ने जवाहर लाल नेहरू को बताया कि लैटिन अमेरिका में संयुक्त राज्य अमेरिका साम्राज्यवादी नीति का ही सहारा लिये हुए है। भारत लौटने के बाद भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को दिये गये प्रतिवेदन में नेहरू ने लिखा 'भविष्य की सबसे गंभीर समस्या अमेरिका साम्राज्यवाद होने जा रहा है, ब्रिटिश साम्राज्यवाद के दिन अब लद चुके है।''

भारत के कतिपय क्षेत्रों में यह धारणा प्रचलित है कि अमेरिका के राष्ट्रपति स्वर्गीय रूजवेल्ट ने भारत को स्वतंत्रता दिलाने में इग्लैण्ड पर दबाव डालकर महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी। अमेरिका की इस तथाकथित भूमिका को यदा कदा गौरवान्वित भी

किया गया है। किन्तु वास्तव में अमेरिका प्रशासन ने कोई ऐसा रचनात्मक योगदान नहीं दिया जिसे भारतीय इतिहास में गौरवमय स्थान दिया जा सके।

शीतयुद्ध के बाद भारत–अमेरिका सम्बन्ध

शीतयद्ध के अन्त, सोवियत संघ के विखराव और खाड़ी युद्ध में संयुत राज्य अमेरिका के नेतृत्व में संयुक्त बल की विजय ने सम्पूर्ण विश्व को 'नई विश्व व्यवस्था' की ओर ढकेल दिया है। भारत और अमेरिकी सम्बन्धों में शीतयुद्ध के अन्त के साथ युगान्तकारी परिवर्तन परिलक्षित हो रहे है। शीतयुद्ध के अन्त के साथ अब दोनों देश एक–दूसरे से ईमानदारी से भुतकाल की संदेहपरक दृष्टि को त्यागकर खुलकर अर्न्तराष्ट्रीय मुद्दों पर बात कर सकते हैं। अमेरिका का सामरिक, महत्व कम हुआ है। प्रथम बार, अमेरिका दक्षिण एशिया के राष्ट्रों से सीधे संवाद बनाने की स्थिति में है। आर्थिक रूप में, साम्यवादी व्यवस्था के असफल होने के साथ भारत सरकार के समान विश्व के अन्य देश भी बाजारोन्मुख आर्थिक सुधारों की ओर उन्मुख हुए है। जो कि अमेरिका की इच्छा हैं शीतयुद्ध के बाद जो नई विश्व व्यवस्था की तस्वीर उभरकर सामने आ रही है उसकी कतिपय विशेषताओं में भूमण्डलीकरण, उदारीकरण बाजारोन्मुख अर्थव्यवस्था, सूचना प्रौद्योगिकी, एक ध्रुवीय विश्व व्यवस्था की पुर्नरचना हो रही हैं। ऐसे मे भारत अमेरिकी सम्बन्धों में उपरोक्त कतिपय नई विश्व व्यवस्था को विशेषताओं के प्रकाश में नये मुद्दे मानवीय, आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय दृष्टि से महत्वपूर्ण है। ये मुख्यतया सतत विकास से जुड़े हुए हैं।

ऐसे मुद्दो में प्रमुख हैः मानव अधिकार, विकास का अधिकार, विश्व व्यापार, पर्यावरण संरक्षण, उत्तर दक्षिण संवाद, निःशस्त्रीकरण, अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद, नई अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की माँग, गरीबी उन्मूलन, टिकाऊ विकास, ज्यादा विदेशी निवेश और प्रौद्योगिकी हस्तान्तरण आदि। अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने 25 मार्च, 2000 को इस्लामाबाद (पाकिस्तान) में इसी ओर संकेत करते हुए जो कुछ कहा वह प्रासंगिक है। ''यह युग उन लोगों को पुरस्कृत नहीं करता जो खून से सरहदों की लकीर दुबारा खींचने का फिजूल का प्रयास करते है। यह युग उनका है जो सरहदों स आगे देखकर वाणिज्य और व्यापार में साझीदार बनाना चाहते है।''

भारत और गुटनिरपेक्ष नीति

गुटनिरपेक्ष नीति और भारत में विशेष सम्बन्ध रहा है। गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के प्रमुख जनक नेहरू, नासिर, और टीटों थे। भारत की ओर से गुट निरपेक्ष आन्दोलन को दिशा देने में नेहरू जी का विशेष योगदान रहा है। अतः अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में प्रारंभ से ही गुट निरपेक्षता का दृष्टिकोण होने के कारण भारत की चर्चा करना अत्यन्त प्रासंगिक है। गुट निरपेक्षता नीति का विश्व के किसी भी गुट के साथ द्विपक्षीय सम्बन्धों के आधार पर सैनिक समझौते में भाग न लेना है। इस नीति का पालन करने वाले राष्ट्र जहाँ एक ओर गुटबाजी की विश्व राजनीति से विलग रहते हैं। वहीं दूसरी ओर विश्व शान्ति और सुरक्षा में प्रगति हेतु संयुक्त राष्ट्र संघ और अन्य अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों को भरपुर मदद देते है। इसका अर्थ कदापि 'तटस्थता'' की नीति नहीं हैं जैसा कि भारतीय प्रधानमंत्री नेहरू जी ने गुट निरपेक्ष नीति का अर्थ स्पष्ट करते हुये कहा था– ''यदि स्वतंत्रता का हनन होगा, न्याय की हत्या होगी अथवा कही आक्रमण होता तो वहाँ हम न तो आज तटस्थ रह सकते है। और न भविष्य में रहेंगे।'' यह नीति गुट निरपेक्ष देशों की अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उठने वाली दैनादिन की ज्वलंत समस्याओं पर उनके गुणानुसार अपनी स्वतंत्र प्रतिक्रिया को व्यक्त करने के योग्य बनाती है।

भारत–सोवियत सहयोग व मैत्री शान्ति तथा गुट निरपेक्षता

9 अगस्त 1971 को भारत और सोवियत संघ के बीच की गयी मैत्री व सहयोग सन्धि को लेकर गंभीर विवाद चलता रहा है कि इससे भारतीय गुट निरपेक्ष आन्दोलन का उल्लंघन हुआ है , या नहीं इस बात का मूल्यांकन करने से पहले यहाँ इस सन्धि के पूर्व भारत के समक्ष तत्कालीन बाहरी चुनौतियों का जिक्र कर देना प्रासंगिक होगा। 1970 में पूर्वी पाकिस्तान में पाकिस्तानी सरकार (याहिया सरकार) के बर्बर दमन के खिलाफ विद्रोह हुआ और स्वतंत्र देश की माँग उठी। पाकिस्तानी दमन से पीड़ित पूर्वी पाकिस्तान के करीब 90 लाख लोग भारत में शरणार्थियों के रुप में आवास , भोजन एवं कपड़ों की व्यवस्था कर रही थी। वही दूसरी ओर पाकिस्तान ने भारत के विरूद्ध सैनिक युद्ध छेड़ने की तैयारियाँ शुरू कर दी। अमरीका ने घोषणा की कि वह भारत पाक युद्ध में निष्क्रिय नहीं रहेगा और उसने चीन से घोषणा करवा दी कि वह भारत पाक में भारत के विरूद्ध पाकिस्तान की सहायता करेगा। इस प्रकार भारतीय सुरक्षा के समक्ष गंभीर चुनौती उपस्थित हो गयी। ऐसी अवस्था में सोवियत मैत्री एवं सहयोग सन्धि पर हस्ताक्षर करके गुट निरपेक्षता नीति का उल्लंघन किया है। दूसरी तरफ भारतीय एवं सोवियत शासकों और विद्वानों के मत में इस सन्धि से भारतीय गुट निरपेक्ष नीति का किसी प्रकार का उल्लंघन नहीं हुआ है। उनका मानना है कि यह सन्धि भारत और सोवियत संघ के बीच बढ़ती मैत्री व सहयोग का प्रतीक है।

अमरीका की दृष्टि में निर्गुट आन्दोलन

कुछ वर्ष पूर्व निवर्तमान अमरीकी राजदूत वेरनन ए. वाल्टर्स ने कहा था कि संयुक्त राष्ट्र मंच पर उसे जितनी परेशानियाँ सोवियत संघ या चीन से नहीं हुई उतनी निर्गुट आन्दोलन के राष्ट्रों से हुई हैं। राजदूत के अनुसार 'उस समय 102 निर्गुट राज्य जिनमें अधिकांश विकासशील और समाजवादी देश है। अमरीका के खिलाफ एक जुट है'' वे निर्गुट नहीं है। यह संयुक्त राष्ट्र संघ में 80 प्रतिशत मामलों पर अमरीका के खिलाफ मतदान करते थे। निर्गुट आन्दोलन सौम्य होता जा रहा है किन्तु इसमें अभी वर्षो लग जाऐंगे।

भारत पर चीनी आक्रमण और गुटनिरपेक्षता

भारत की गुट निरपेक्षता नीति की चर्चा करते समय भारत पर 1962 में चीन द्वारा अचानक फौजी हमला करने के फल स्वरूप नीति प्राशंगिता के साथ साथ इस बात का विश्लेषण जरूरी है कि क्या भारत गुट निरपेक्षता की नीति से हट गया? जब चीन ने भारत पर बर्बर हमला किया तो सोवियत संघ जैसे हमारे पारम्परिक मित्र ने यह तर्क देकर अपने हाथ खींच लिये कि भारत हमारा मित्र है तो चीन हमारा भाई उसने भारत को किसी भी प्रकार उस हमले से बचाने से इंकार कर दिया। उधर अमरीका की प्रतिद्वन्द्वी शक्ति ने भी युद्ध के दौरान भारत की ठोस मदद नहीं की। उसने उल्टे भारत पर यह दबाव डाला कि वह अमरीका द्वारा प्रवर्तित सैनिक गठबन्धनों में सम्मिलित हो जाये। या फिर अमरीका की परमाणु छतरी स्वीकार कर ले। अर्थात् भारत पर आक्रमण होने पर अमरीका उसकी मदद करेगा। इन्हीं तर्को से प्रभावित होकर भारतीय संसद के अनेक सदस्यों ने यह मत व्यक्त किया था। कि यदि ''भारत किसी महाशति के सैन्य संगठन से जुड़ा होता तो उसे चीनी बर्बर हमले के बुरे दिन नहीं देखने पड़ते। इसी प्रकार के तर्क भारत द्वारा गुट निरपेक्षता नीति अपनाये जाने की प्रासंगिकता पर प्रश्न चिन्ह खड़ा कर देते है।

निष्कर्ष

आजादी के लगभग छह दशकों के बाद विश्व समुदाय के सामने भारत की छवि निखर गयी है। दुनियाँ की प्रतिष्ठत अग्रणी

पत्रिकाओं ने न केवल अपना काफी ध्यान और सीन इस देश को दिया, बल्कि एक उभरती हुई आर्थिक शक्ति के रूप में उसकी बढ़ चढ़ तारीफ की वे दिन अब लद गये, जब भारत का मतलब महज जादूगरों की कलाबाजी या स्त्रियों को जबरदस्ती सती बनाने से लगाया जाता था। सड़कों पर भूखा तथा प्राकृतिक आपदाओं व इन्सानी कृत्यों के शिकार लोगों की मदद की गुहार भारत की पहचान पर पिघलती हुई थी।

निःसन्देह, भारत नई करवटें ले रहा है लेकिन इससे भी खास बात यह है कि दुनिया की निगाह, महाशक्तियों की नजर में भारत को लेकर जो अवधारणाएँ अब तक थी, वे तेजी से बदल रही है। भारत तेजी से आर्थिक महाशक्ति के रूप में उभर रहा है, जिसके पास विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में दुनिया में सबसे प्रशिक्षित श्रमशक्ति है। भारतीय काल सेन्टरों की कामयाबी तो अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज बुश के चुनाव में एक महत्वपूर्ण मुद्दे के रूप में उभरकर सामने आई थी। अमेरिका में रह रहे बीस लाख भारतीयों के जिनमें बड़ी संख्या समृद्ध और अपने क्षेत्र में अग्रणी लोगों में हैं, प्रभाव और रसूख की एक बड़ी वजह यह है कि वे एक उभरती हुई आर्थिक महाशक्ति देश से संबंधित है।

जिस गति से भारत आगे बढ़ रहा है उसमें यह क्षमता है कि वह पश्चिम के साथ मिलकर अगले दशक की विश्व राजनीति में अग्रणी भूमिका निभाए। यह किस तरह और कितनी जल्दी होगा, यह पूरी तरह पश्चिमी शक्तियों के इस रूप पर निर्भर करता है कि वे भारत को उसकी शर्तो पर अपने साथ लेने को कब तक सहमत होती है।

जवाहर लाल नेहरू की गुटनिरपेक्ष नीति से इंदिरा गांधी की आत्मनिर्भरता की नीति तक श्रीमती गांधी के बांग्लादेश युद्ध से राजीव गांधी के नई सदी के दर्शन तक, नरसिंहराव के घरेलू एवं विदेशनीति में आम सहमति के विचार से अटल बिहारी वाजपेयी के सक्षम भारत के स्वप्न तक भारत ने एक लम्बा सफर तय किया है और अब मनमोहन सिंह एक उभरती आर्थिक महाशक्ति के रूप में उसका नेतृत्व कर रहे है। इसलिए महाशक्तियों का ध्यान भारत की आर्थिक एवं सामरिक ताकत की ओर जाने लगा है। महाशक्त्यिाँ भारत का संज्ञान इसलिए ले रही है, क्योंकि वे जानती है कि भारत का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन अभी आना बाकी है।

संदर्भ

1. पी0 जे0 एल्ड्रिज, दा पौलिटिक्स ऑफ फॉरेनहैड इन इण्डिया दिल्ली पेज 201
2. एम0 एस0 राजन, इण्डिया इन्वौल्ड ऑफेयर्स बॉम्बे दा टाइम्स ऑफ इण्डिया, 1998 पेज 6
3. जे0 एन0 दीक्षित, भारतीय विदेश नीति प्रभात प्रकाशन दिल्ली, 1999, पेज 18
4. महेन्द्र वेद, अमर उजाला, 26 अप्रैल 2003
5. सिविल सर्विसेज टाइम्स, 2004, पेज 21
6. सिविल सर्विसेज टाइम्स, 2004, पेज 26
7. अमर उजाला, 17 जनवरी 2004,
8. टी0 वी0 कुन्हीई कृष्णन, द अन्फ्रेन्डली फ्रेन्ड इण्डिया एण्ड अमेरिका देलही देज 203
9. जे0 विलियम इण्डिया पाकिस्तान एण्ड द ग्रेट पावर्स, लन्दन, पेंज 103
10. यू0 आर0 घई, भारत अमरीका सम्बन्ध जालन्धर, पेज 108
11. हिन्दुस्तान, 11 मई 1999 नई दिल्ली
12. जे0 वॉल्टर दा ऐज ऑफ टैरोरेज आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस लन्दन पेज 203
13. वी0 एन0 चक्रवर्ती, ग्रेट पावर्स इण्डिया एण्ड अमेरिका 2003 लन्दन